सह–शैक्षणिक गतिविधियों के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों का अध्ययन

डॉ. राजेन्द्र कुमार
डीन शिक्षा संकाय
श्रीगंगानगर शिक्षक प्रशिक्षण स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर।

सारांश :–

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्ता द्वारा सह–शैक्षणिक गतिविधियों के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्तियों का अध्ययन किया गया है। दत्त संकलन हेतु स्व–निर्मित अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है तथा न्यादर्श रूप में 140 विद्यार्थियों का चयन किया गया है तथा निष्कर्ष में पाया कि सहशैक्षणिक गतिविधियों के प्रति सरकारी व गैर सरकारी छात्राओं की अभिवृत्ति में अंतर पाया जाता है।

प्रस्तावना :–

शिक्षा जीवन का सम्पूर्ण शास्त्र है। ज्ञान का अंतिम लक्ष्य चरित्र निर्माण करना है। शिक्षा चारित्रिक विकास की एक मान्य प्रक्रिया है और शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति की चारित्रिक व मानसिक शक्तियों का विकास करना है।

भारतीय ऋषि अविद्या एवं अशिक्षा को मृत्यु तुल्य मानते हैं। यही नहीं ''ज्ञानाम् तृतीयम् मनुजस्य नेत्रम्'' वैदिक काल से ही शिक्षा को वह प्रकाश माना गया है जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रकाशित करने का सामर्थ्य रखता है। इसीलिये विद्वानों ने शिक्षा को तीसरा नेत्र कहा है। शिक्षा वस्तुतः वह प्रक्रिया है जिससे मनुष्य बेहतर मनुष्य बनता है और अपनी इस दुनिया को और बेहतर बनाने का संकल्प और कौशल अर्जित करता है। शिक्षा से व्यक्ति में आत्म निर्भरता, आत्मिक ऊर्जा और अपने अस्तित्व का अहसास होता है।

शोध की आवश्यकता :–

सहशैक्षणिक गतिविधियों से अभिप्राय उन गतिविधियों से है जिनके सहयोग से शिक्षण कार्य एवं विद्यालय का वातावरण सजीव हो उठता है। ये प्रवृतियां बालक की मूल प्रवृतियों का शोधन कर, उसे सामाजिकता तथा नैतिकता से परि–पूरित कर संस्कारित करती है, परन्तु ये परिणाम तभी प्राप्त होते हैं जब इन सह–शैक्षणिक गतिविधियों का संचालन सुव्यवस्थित एवं सुनियोजित ढंग से किया गया हो जो कि एक शिक्षक पर निर्भर करता है। शिक्षक ही सह–शैक्षणिक गतिविधियों का संगठन, नियोजन करता है वही विद्यार्थियों को समय–समय पर मार्गदर्शन करता है और पाठ्य सहगामी क्रियाओं का नेतृत्व भी करता है। अतः यह सभी गुण एक योग्य शिक्षक में होने चाहिए साथ ही सह–शैक्षणिक गतिविधियों का ज्ञान तथा उनमें उसकी रूचि भी आवश्यक है तभी वह विद्यार्थियों को प्रेरित कर सह–शैक्षणिक क्रियाओं को सफल बना सकता है। सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पति उच्च मानी जाती है क्योंकि वहां शैक्षिक स्तर को उच्च हेतु अधिक प्रयास किये जाते हैं परन्तु सह–शैक्षणिक गतिविधियों को विशेष महत्त्व नहीं दिया जाता है।

शोध का कथन :–

''सहशैक्षणिक गतिविधियों के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृति का अध्ययन।''

शोध के उद्देश्य :–

1. सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के छात्रों का सहशैक्षणिक क्रियाओं के प्रति अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय की छात्राओं का सहशैक्षणिक गतिविधियों के प्रति अभिवृति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध में प्रयुक्त शब्दावली :–

1. विद्यार्थी – विद्या को प्राप्त करने वाला अर्थात् ज्ञान को ग्रहण करने वाला।
2. सहशैक्षणिक गतिविधियां – पाठ्य संबंधी तथा पाठ्योत्तर गतिविधियां होती है जो बालक की अतिरिक्त ऊर्जा या शक्ति को सकारात्मक दिशा में अग्रसर करती है

शोध की परिकल्पनाएँ :–

1. सहशैक्षणिक गतिविधियों के प्रति सरकारी व गैर सरकारी छात्राओं की अभिवृति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. सहशैक्षणिक गतिविधियों के प्रति सरकारी छात्रों व गैर सरकारी छात्रों की अभिवृति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन में प्रयुक्त विधि :–

वर्तमान शोध विद्यार्थियों की सहशैक्षणिक गतिविधियों के प्रति अभिवृति का अध्ययन एक सर्वेक्षण हैं अतः प्रस्तुतकर्त्ता ने सर्वेक्षण सर्वेविधि का उपयोग किया है।

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श :–

शोधकर्त्ता ने उच्च माध्यमिक स्तर तक के विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में दिया है जिसमें 04 सरकारी एवं 04 गैर सरकारी विद्यालय के छात्र व छात्राओं को सम्मिलित किया गया है। 140 विद्यार्थियों को यादृच्छिक न्यादर्श चयन विधि द्वारा चयनित किया गया।

अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :–

प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्त्ता द्वारा स्वनिर्मित अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया गया है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं निर्वचन :–

परिकल्पना संख्या 2

सहशैक्षणिक गतिविधियों के प्रति सरकारी व गैर सरकारी छात्राओं की अभिवृति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी संख्या 4.2

सहशैक्षणिक गतिविधियों के प्रति सरकारी व गैर सरकारी छात्राओं की अभिवृति

विद्यार्थी	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	'टी' मूल्य	सार्थकता 0.05
सरकारी छात्राएं	35	185.77	14.30	2.29	सार्थक
गैर सरकारी छात्राएं	35	179.31	8.58		

उक्त सारणी में सरकारी छात्राओं व गैर सरकारी छात्राओं की संख्या क्रमशः 35, 35 है की सहशैक्षणिक गतिविधियों के प्रति अभिवृति को दिखाया गया है। सरकारी व गैर सरकारी छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 185.77 तथा 179.31 पाया गया तथा प्रमाप विचलन क्रमशः 14.30 व 8.58 पाया गया। अंतर की सार्थकता की जांच के लिये आंकड़ों का 'टी' मूल्य ज्ञात किया जो 2.29 है तथा सार्थकता स्तर 0.05 पर 1.96 है से अधिक है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सहशैक्षणिक गतिविधियों के प्रति सरकारी व गैर सरकारी छात्राओं की अभिवृति में अंतर पाया जाता है। सह–शैक्षणिक गतिविधियों के प्रति सरकारी छात्राओं की अभिवृत्ति गैर सरकारी छात्राओं की तुलना में अधिक पाई गई।

परिकल्पना संख्या 2

सहशैक्षणिक गतिविधियों के प्रति सरकारी छात्रों व गैर सरकारी छात्राओं की अभिवृति में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

सारणी संख्या 4.3

सहशैक्षणिक गतिविधियों के प्रति सरकारी छात्रों व गैर सरकारी छात्राओं की अभिवृति

विद्यार्थी	संख्या (N)	मध्यमान (Mean)	मानक विचलन (S.D.)	't' मूल्य	सार्थकता 0.01
सरकारी छात्र	35	189.48	7.80	5.21	सार्थक
गैर सरकारी छात्राएं	35	179.31	8.58		

सारणी संख्या 4.3 में सरकारी छात्रों व गैर सरकारी छात्राओं की संख्या क्रमशः 35, 35 है की सहशैक्षणिक गतिविधियों के प्रति अभिवृति को दिखाया गया है। सरकारी छात्रों व गैर सरकारी छात्राओं का मध्यमान क्रमशः 189.48 तथा 179.31 पाया गया तथा प्रमाप विचलन क्रमशः 7.80 व 8.58 पाया गया। अंतर की सार्थकता की जांच के लिये आंकड़ों का 'टी' मूल्य ज्ञात किया जो 5.21 है तथा सार्थकता स्तर 0.01 पर 2.59 से अधिक है। इसलिये निर्मित परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सहशैक्षणिक गतिविधियों के प्रति सरकारी छात्रों व गैर सरकारी छात्राओं की अभिवृति में अंतर पाया जाता है। सह–शैक्षणिक गतिविधियों के प्रति सरकारी छात्रों की अभिवृत्ति गैर सरकारी छात्राओं की तुलना में अधिक पाई गई।

निष्कर्ष :–

1. परिकल्पना संख्या दो का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि सहशैक्षणिक गतिविधियों के प्रति सरकारी व गैर सरकारी छात्राओं की अभिवृत्ति में अंतर पाया गया है। उक्त निष्कर्ष हमें सरकारी व गैर सरकारी छात्राओं की अभिवृत्ति में पाये जाने वाले मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी' मूल्य के विवेचन के आधार पर मिले हैं।
2. परिकल्पना संख्या तीन के आंकड़ों का मध्यमान, मानक विचलन एवं 'टी' मूल्य के विवेचन करने पर यह ज्ञात होता है कि सहशैक्षणिक गतिविधियों के प्रति सरकारी छात्रों व गैर सरकारी छात्राओं की अभिवृत्ति में अंतर पाया गया।

शोध के शैक्षिक अनुप्रयोग एवं महत्व :–

1. शोध कार्य के लिये न्यादर्श अधिक विस्तृत लिया जाना चाहिए ताकि अध्ययन की विश्वसनीयता अधिक हो सके।

2. प्रस्तुत शोध कार्य माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर विद्यार्थियों तक ही सीमित किया गया है इसे प्राथमिक, उच्च प्राथमिक अथवा व्यावसायिक महाविद्यालयों के विद्यार्थियों पर भी शोध अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1 बघेला, एच.एस. :''शैक्षिक प्रशासन एवं विद्यालय संगठन'', राजस्थान प्रकाशन जयपुर, 2006
2 सरीन एवं सरीन :''शैक्षिक अनुसंधान की विधियां'' विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2, 2007
3 सिंह, रामपालः''विद्यालय प्रशासन एवं संगठन'',विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2, 2007
4 मिश्रा, महेंद्रकुमार :''शैक्षिक प्रशासन एवं विद्यालय संगठन'',यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन्स प्रा.लि., जयपुर

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com